



INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

वागड़ क्षेत्र के धार्मिक स्थल : पर्यटन एवं संभावनाएँ (Religious Places of Vagad Region: Tourism and Possibilities)

Author – Prakash Yadav, Assistant Professor- History, Government College Chhoti Sarwan, Banswara Rajasthan.

Abstract : वागड़ क्षेत्र, जो राजस्थान के दक्षिणी भाग में स्थित है, अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और प्राचीन मंदिरों के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ के धार्मिक स्थल न केवल श्रद्धालुओं के लिए आस्था का केंद्र हैं, बल्कि पर्यटकों के लिए भी आकर्षण का मुख्य कारण हैं। इस क्षेत्र में पर्यटन की अपार संभावनाएँ हैं, जिन्हें सही दिशा में विकसित करके स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा दिया जा सकता है। बांसवाड़ा जिले में स्थित नन्दनी माता मंदिर (वागड़ का पावागढ़) गुजरात के प्रसिद्ध पावागढ़ मंदिर का प्रतिरूप माना जाता है। नवरात्रि के दौरान यहाँ भक्तों की भारी भीड़ उमड़ती है। डूंगरपुर के आसपुर में स्थित आशापुरा माता मंदिर चौहान वंश की कुलदेवी को समर्पित है। यहाँ की मान्यता है कि माँ आशापुरा भक्तों की सभी मनोकामनाएँ पूरी करती हैं।

Keywords : वागड़ क्षेत्र के धार्मिक स्थल, पर्यटन, संभावनाएँ, वागड़ पर्यटन स्थल, वागड़ का धार्मिक महत्व, पर्यटकों के लिए वागड़, वागड़ की संस्कृति, वागड़ के मंदिर, वागड़ के जैन तीर्थ, वागड़ के ऐतिहासिक स्थल, धार्मिक पर्यटन वागड़, डूंगरपुर पर्यटन, बांसवाड़ा पर्यटन, त्रिपुरा सुंदरी मंदिर, बेणेश्वर धाम, आनंदपुरी मंदिर, वागड़ के जलाशय, धार्मिक उत्सव वागड़, वागड़ के प्रमुख मंदिर, वागड़ में आध्यात्मिक पर्यटन, पर्यटन उद्योग वागड़, पर्यावरण और पर्यटन।

Article : वागड़ क्षेत्र, जो राजस्थान के डूंगरपुर और बांसवाड़ा जिलों को समाहित करता है, धार्मिक पर्यटन की दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है। यहां के धार्मिक स्थलों में ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और प्राकृतिक सुंदरता का संगम देखने को मिलता है। यह क्षेत्र विभिन्न धर्मों और समुदायों के अनुयायियों के लिए आस्था और आध्यात्म का केंद्र है।

बनजारा भगवान मंदिर (बांसवाड़ा) – भगवान कृष्ण को समर्पित यह मंदिर स्थानीय भक्तों के लिए आस्था का प्रमुख केंद्र है। यहां वार्षिक मेले का आयोजन होता है, जो पर्यटकों को आकर्षित करता है।

दिगम्बर जैन अतिशय तीर्थ अंदेश्वर पार्श्वनाथजी – बांसवाड़ा से 40 कि.मी. की दूरी पर दिगम्बर जैन अतिशय तीर्थ अंदेश्वर पार्श्वनाथजी सभी धर्मों के आस्था का केन्द्र है। मुख्य मंदिर में जैन तीर्थंकर पार्श्वनाथजी की पद्मासनस्थ कृष्णवर्णा पाषाण प्रतिमा है। गर्भगृह और दीवारों पर भगवान पार्श्वनाथजी के दस भव और जैन तीर्थंकरों को अत्यंत सुंदर कांच में चित्रित किया गया है। पहाड़ी पर शिव मंदिर उत्तर में दक्षिणाभिमुख हनुमान मंदिर व पार्श्व में पीर दरगाह भी है जो सभी धर्मावलम्बियों का केन्द्र है।



रामकुण्ड – तलवाड़ा से 3 किमी की दूरी पर प्राचीन तीर्थस्थल **रामकुण्ड** है। चट्टानों से बनी बड़ी गुफाओं में शिवलिंग एवं अन्य प्रतिमाएं हैं। गुफा के तल में जलकुण्ड है जिसे 'रामकुण्ड' कहा जाता है। ऊपर से देखने पर एक पहाड़ी है जहां हरियाली एवं प्राकृतिक सौन्दर्य से पूर्ण यह स्थल मनोहारी है। यहां एक बड़ी गुफा भी है मान्यता है कि वह गुफा 'घोटिया आम्बा' तक जाती है।



पाराहेड़ा



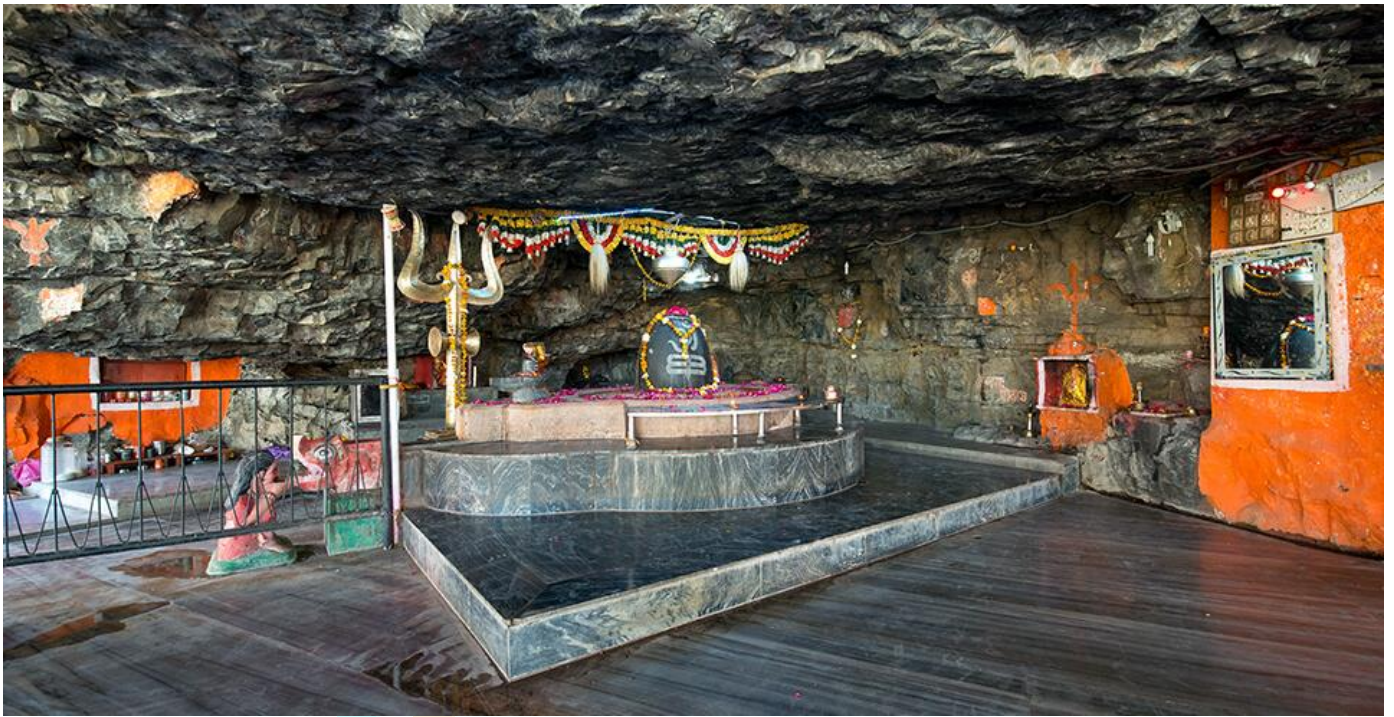
पाराहेड़ा एक प्रसिद्ध शिव मंदिर, गढी तहसील में स्थित है। यह 12वीं शताब्दी में राजा मंडलिक द्वारा निर्मित किया गया था और बांसवाड़ा से लगभग 22 किलोमीटर दूर है।

राज मंदिर



राज मंदिर, जिसे सिटी पैलेस भी कहा जाता है, 96वीं शताब्दी का एक ढांचा है जो एक पहाड़ी के ऊपर ऐसे विराजमान है जैसे कि नीचे के शहर पर नज़र रखनी हो। यह पुराने राजपूत वास्तुकला की शैली में निर्मित है। यह महल अभी भी शाही परिवार के अंतर्गत आता है।

मदारेश्वर मंदिर — बांसवाड़ा शहर के उत्तर-पूर्व में स्थित मदारेश्वर महादेव का मंदिर शिव भक्तों की आस्था का केन्द्र है। पर्वतमाला के भीतर गुफा में अवस्थित अनोखे प्राकृतिक स्वरूप के कारण शिवलिंग श्रद्धालुओं की मनोकामना का स्थल है। यहाँ पहाड़ी के ऊपर से शहर एवं प्राकृतिक सौन्दर्य को निहारा जा सकता है। श्रावण मास में बेणेश्वर से मदारेश्वर तक कावड यात्री बेणेश्वर से पवित्र जल कलश में भरकर पैदल ही यहाँ पहुँचते हैं, तत्पश्चात् मदारेश्वर का जलाभिषेक करते हैं साथ ही जिले का शिवरात्रि में सबसे बड़ा मेला भी लगता है।



कल्पवृक्ष – रतलाम मार्ग पर स्थित पुराणों के अनुसार समुद्र मंथन में उत्पन्न चौदह रत्नों में से एक कल्पवृक्ष माना गया है। मान्यतानुसार पीपल एवं वट वृक्ष तरह विशाल यह वृक्ष मनोकामनाएं साकार करता है। एक दुर्लभ वृक्ष है जिसका धार्मिक एवं सामाजिक महत्व है। श्रावण मास एवं अमावस के दिन विशेष अर्चना की जाती है। यहां कल्पवृक्ष जोड़े अर्थात् नर-मादा के रूप में स्थित है, जिन्हें राजा-रानी के नाम से जाना जाता है। नर अर्थात् राजा का तना पतला एवं मादा अर्थात् रानी का तना मोटा होता है। लोक मान्यतानुसार इसकी पूजा रोग निवारण के रूप में की जाती है। अर्थात् कल्पवृक्ष की छाल एवं फल सुख समृद्धि का प्रतीक माना गया है।



राजस्थान का अमरनाथ: ज्वालामुखी शिवलिंग (धमोतर) –

धमोतर स्थित इस प्राकृतिक शिवलिंग को "अमरनाथ" का स्वरूप कहा जाता है। यह स्थल खासतौर पर शिवभक्तों के लिए आकर्षण का केंद्र है।

माही डैम के पास स्थित जैन मंदिर (बांसवाड़ा) – जैन धर्म के अनुयायियों के लिए यह मंदिर विशेष महत्व रखता है। यहां का शांत और मनमोहक वातावरण ध्यान और साधना के लिए उपयुक्त है।

श्री नागनाथ महादेव (डूंगरपुर) – यह मंदिर भगवान शिव को समर्पित है और यहां सावन के महीने में भक्तों की भीड़ रहती है।

धार्मिक पर्यटन का विकास – इन स्थलों को बेहतर बुनियादी सुविधाओं, जैसे सड़क, बिजली, और आवास से जोड़ा जाए तो यह क्षेत्र अधिक पर्यटकों को आकर्षित कर सकता है।

सांस्कृतिक उत्सव और मेले –

स्थानीय धार्मिक मेलों और उत्सवों को राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर प्रचारित किया जाए। इससे धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा।

पारिस्थितिकी और धार्मिक पर्यटन का संयोजन

वागड़ क्षेत्र की प्राकृतिक सुंदरता, जैसे माही नदी और पहाड़ों के साथ धार्मिक स्थलों का संयोजन किया जा सकता है। इस प्रकार, पर्यटकों को आध्यात्म और प्रकृति दोनों का अनुभव मिलेगा।

पर्यटकों को बेहतर अनुभव देने के लिए धार्मिक स्थलों को जोड़ते हुए गाइडेड टूर शुरू किए जा सकते हैं। इससे स्थानीय रोजगार को भी बढ़ावा मिलेगा।

निष्कर्ष : वागड़ क्षेत्र में धार्मिक पर्यटन की असीम संभावनाएं हैं। यदि इन स्थलों का संरक्षण और विकास किया जाए, तो यह क्षेत्र धार्मिक और सांस्कृतिक पर्यटन के मानचित्र पर अपनी महत्वपूर्ण पहचान बना सकता है।

References :

1. खान, एम. ए., (2005) " प्रिंसिपल ऑफ ट्यूरिज्म डवलपमेन्ट", अनमोला प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. गुप्ता, मोती लाल, (1982) "ब्रज सेन्ट्रम ऑफ इण्डिया कल्चर" आगम कला प्रकाशन, दिल्ली
3. ग्रीन वुड, डी.जे. (2003) ट्यूरिज्म एज एन एजेंट ऑफ चेंज, ऑस्ट्रेलियन ज्योग्राफीकल स्टैडिज, मेलबोर्न, पृ.सं. 128-42 130 डेन, एस.एस., (1977) "एनोमी इगो, इनहेसं में ट एण्ड ट्यूरिज्म" एनल्स ऑफ ट्यूरिज्म रिसर्च वाल्यूम-4
4. डोडस आर एण्ड माथुर, एन., (1993) "ट्यूरिज्म एण्ड इकोनोमिक सिस्टम इन्टरनेशनल, जे मानग ट्यूर
5. जैन, हुकम चन्द एण्ड माली, नारायण (2012) राजस्थान इतिहास एवं संस्कृति एन्साइक्लोपीडिया, जैन प्रकाशन मन्दिर, जयपुर पृ. 220,
6. तिवारी, एस.पी, (1993) "पर्यटन योजना और विकास", राजस्थान पत्रिका केशरगढ़, जयपुर रविवारीय परिशिष्ट पृ.सं. 1
7. नेगी, जे.एम.एस. (1982) "ट्यूरिज्म एण्ड होटलरिंग ए वर्ल्ड वाइड इण्डस्ट्री" न्यू दिल्ली, पृ.सं. 2
8. नेगी जे. (1995) ट्यूरिज्म डवलपमेन्ट एण्ड रिसोर्टर्न कंजरवेशन, मान पब्लिकेशन, देहरादून पृ. स. 27-3